

सियार की रणनीति

एक जंगल में महाचतुरक नामक सियार रहता था। एक दिन जंगल में उसने एक मरा हुआ हाथी देखा। उसकी बाँछे खिल गईं। उसने हाथी के मृत शरीर पर दाँत गड़ाया पर चमड़ी मोटी होने की वजह से, वह हाथी को चीरने में नाकाम रहा।

वह कुछ उपाय सोच ही रहा था कि उसे सिंह आता हुआ दिखाई दिया। आगे बढ़कर उसने सिंह का स्वागत किया और हाथ जोड़कर कहा, “स्वामी आपके लिए ही मैंने इस हाथी को मारकर रखा है, आप इस हाथी का मांस खाकर मुझ पर उपकार कीजिए।” सिंह ने कहा, “मैं तो किसी के हाथों मारे गए जीव को खाता नहीं हूँ, इसे तुम ही खाओ।”

सियार मन ही मन खुश तो हुआ पर उसकी हाथी की चमड़ी को चीरने की समस्या अब भी हल न हुई थी। थोड़ी देर में उस तरफ एक बाघ आ निकला। बाघ ने मरे हाथी को देखकर अपने होंठ पर जीभ फिराई। सियार ने उसकी मंशा भाँपते हुए कहा, “मामा आप इस मृत्यु के मुँह में कैसे आ गए? सिंह ने इसे मारा है और मुझे इसकी रखवाली करने को कह गया है। एक बार किसी बाघ ने उनके शिकार को जूठा कर दिया था तब से आज तक वे बाघ जाति से नफरत करने लगे हैं। आज तो हाथी को खाने वाले बाघ को वह जरूर मार गिराएंगे।”

यह सुनते ही बाघ वहाँ से भाग खड़ा हुआ। पर तभी एक चीता आता हुआ दिखाई दिया। सियार ने सोचा चीते के दाँत तेज होते हैं। कुछ ऐसा करूँ कि यह हाथी की चमड़ी भी फाड़ दे और मांस भी न खाए। उसने चीते से कहा, “प्रिय भाँजे, इधर कैसे निकले? कुछ भूखे भी दिखाई पड़ रहे हो।”

सिंह ने इसकी रखवाली मुझे सौपी है, पर तुम इसमें से कुछ मांस खा सकते हो। मैं जैसे ही सिंह को आता हुआ देखूँगा, तुम्हें सूचना दे दूँगा, तुम सरपट भाग जाना”।

पहले तो चीते ने डर से मांस खाने से मना कर दिया, पर सियार के विश्वास दिलाने पर राजी हो गया। चीते ने पलभर में हाथी की चमड़ी फाड़ दी।

जैसे ही उसने मांस खाना शुरू किया कि दूसरी तरफ देखते हुए सियार ने घबराकर कहा, "भागो सिंह आ रहा है"।

इतना सुनना था कि चीता सरपट भाग खडा हुआ। सियार बहुत खुश हुआ। उसने कई दिनों तक उस विशाल जानवर का मांस खाया। सिर्फ अपनी सूझ-बूझ से छोटे से सियार ने अपनी समस्या का हल निकाल लिया।

सीख : बुद्धि के प्रयोग से कठिन से कठिन काम भी संभव हो जाता है।

बिहार की रत्न नीति

एक एंगल भभेकाएउरुक नभक बिहार ररुठ घा। एक दिन एंगल भउमन एक भरा रुमु काषी दपि। उमकी गकें तीपल गरें। उमन काषी क भेउ मरीर पर एउे गरुषा पर एभरी भरी रुने की वएरु म, वरु काषी क गीरन भेन का भरका। वरु रुकु उपाष मरे की ररु घा कि उम भिंरु मुठ रुमु दपिारें दिय। मुग रेदकर उमन भिंरु का मद्रगउ किय। उर काष एरुकर कका, “भदभी मुपक लिए की भरे उम काषी क भेरकर रापा रु, मुप उम काषी का भांभ पाकर भुर पर उपकार कीलिया।” भिंरु न केका, “भउे किमी क काष भेर गोर सीव क पीरु नकी रु, उम उेमु की पाउ।”

बिहार भन की भन अपु उ केमु पर उमकी काषी की एभरी क गीरन की मभमटु मुठ ही रुल न रुं घी। घरी एरे भउम उरुए एक गाय मु निकला। गाय न भेर काषी क दपिकर मुपन के पर सीरु दियारें। बिहार न उमकी भंम हापउे रुए कका, “भाभा मुप उम भउेक भेन भ केमै मुे गार? भिंरु न उम भेरु रु उर भुर उमकी रापवाली करन के केरु गथा कोरक गर किमी गाय न उनक मिकार क एे कर दिय। घा उर म मुए उक व गाय एउि म नेरउ करन लेग को मुए उ काषी क पीरु वल गाय क वेरु एरु भर गिराएगा।”

वरु मउउ की गाय वरुं म हाग अपरु रुमु। पर उही एक गीठ मुठ रुमु दपिारें दिय। बिहार न भेरे गीठ के एउे उए रुउे को केरु रिभा कर कि वरु काषी की एभरी ही दारु द उर भांभ ही न पाए। उमन गीठ भ केका, “पिय हाए, उर कमे निकल? रुकु हापु ही दपिारें पर रुके।”

भिंरु न उमकी रापवाली भुर भेपी रु, पर उमु उमभमे केरु भांभ पा मकउ को भेरे मे की भिंरु क मुठ रुमु दपिगा, उमु म्रन द द्रगा, उमु भरपए हाग एन।

परुल उे गीठ न रु म भेभ पा न भेभन कर दिय, पर बिहार क विमद्वम दिला न पर गणी रु गेघ। गीठ न पेलरु भ काषी की एभरी दारु दी।

एमे की उमन भांभ पा न मरु किय कि द्रगी उरुए दपिउ रुए बिहार न एगर कर कका, “हाग भिंरु मु ररु रुगे।”

उउन मउन घा कि गीठ भरपए हाग अपरु रुमु। बिहार गरुउ अपु रुमु। उमन केरें दिन उेक उम विमाल एनवर का भांभ पाया। भिंरु मुपनी मरु-गरु म केरे मे बिहार न मुपनी मभमटु का रुल निकाल लिया।

मीप : गम्बुक प्यगे म केठिन म केठिन काभ ही मरुव रु रेउ को

मनद्वार - उरिद्वार अपभे